दंतेवाड़ा जिले का
फागुन मंडई

छत्तीसगढ़ शासन
सत्यमेव जयते

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक : 13

दंतेवाड़ा जिले के फागुन मंडई का मोनोग्राफ अध्ययन

निर्देशन
शम्मी आबिदी (आई.ए.एस.)
संचालक

अध्ययन एवं प्रतिवेदन
डॉ. राजेन्द्र सिंह, डॉ. रूपेन्द्र कवि

छायांकन
डॉ. राजेन्द्र सिंह, अंजार नबी

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण में स्थित दंतेवाड़ा में दंतेश्वरी देवी का प्राचीन शक्तिपीठ स्थित है। दंतेश्वरी देवी, पूर्व बस्तर रियासत के राज परिवार की अधिष्ठात्री एवं कुल देवी है। दंतेश्वरी देवी के प्रति बस्तर क्षेत्र के निवासियों में अगाध श्रद्धा, विश्वास एवं सम्मान है। उनके सम्मान में प्रतिवर्ष फाल्गुन मास में दंतेवाड़ा में 'फागुन मंडई' का आयोजन किया जाता है। लगभग 500 वर्ष पूर्व से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले 45 दिवसीय दंतेश्वरी देवी, भुवनेश्वरी देवी के पूजा पर्व में लगभग 800 देवी-देवताओं के प्रतीकों, विग्रहो, छत्र आदि के साथ उनके उपासक व ग्रामवासी शमिल होते है। यह ''बस्तर दशहरा'' के समान ही व्यापक स्तर पर मनाया जाने वाला पर्व है। इस पर्व में देवी उपासना, देवी परिक्रमा एवं होली पर्व का समावेश है। इसके अलावा यह पर्व बस्तर रियासत काल में शासक व क्षेत्र की प्रजा के मध्य संवाद व सपंर्क सेतु स्वरुप था। जिसमें महाराजा द्वारा प्रजा की समस्याओं की सुनवाई व समाधान किया जाता था। वर्तमान में फागुन मंडई का स्वरुप व्यापक हो रहा है। इस पर्व में समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन हुए है किन्तु मूल भावना, परंपराये, रस्म एवं आस्था यथावत् हैं।

इस अध्ययन कार्य में सहयोग प्रदान करने हेतु दंतेश्वरी मंदिर दंतेवाड़ा के मुख्य पुजारी श्री हरेन्द्र नाथ जिया, श्री लोकेन्द्रनाथ जिया, टेम्पल स्टेट कमेटी की पदाधिकारी एवं सदस्य गण व सहयोगी समस्त गणमान्य नागरिकों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

आशा है कि ''दंतेवाड़ा जिले का फागुन मंडई'' विषय पर आधारित यह प्रकाशन पाठकों, विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित ...

शम्मी आबिदी आई.ए.एस
संचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.)

परिचय

फागुन मंडई, दंतेवाड़ा जिला का सबसे प्रमुख व सबसे विशाल धार्मिक आयोजन है। यह बस्तर रियासत की अधिष्ठात्री दंतेश्वरी देवी के पूजा, धार्मिक अनुष्ठान, मनोरंजन, मेल मिलाप का पर्व है। यह बसंत पंचमी से प्रारंभ होकर देवी–देवताओं के विदाई एवं मंडई समापन तक कुल 45 दिवसीय आयोजन है। जिसमें मुख्य आयोजन 13 दिवसीय होता है। जिसमें एक ओर कलश स्थापना से पालकी भ्रमण के धार्मिक कार्यक्रम होते हैं तो दूसरी ओर होली की तैयारी, होली पर्व तथा मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं। इसमें प्राचीन बस्तर रियासत क्षेत्र के देवी–देवताओं के प्रतीक, विग्रह, स्थानीय व क्षेत्रीय पारंपरिक राजनीतिक प्रमुख जैसे–मांझी, मुखिया, धार्मिक प्रमुख जैसे–पुजारी, गायता आदि व बड़ी संख्या में ग्रामवासी शामिल होते हैं।

उद्देश्य

'दंतेवाड़ा जिले के फागुन मंडई का मोनोग्राफ अध्ययन' का मुख्य उद्देश्य निम्नांकित है -

1. दंतेवाड़ा जिले का फागुन मंडई का सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक व धार्मिक पक्ष का अध्ययन करना।
2. दंतेवाड़ा जिले का फागुन मंडई के आयोजन का उद्देश्य, तिथिवार कार्यक्रम, आमंत्रित देवी–देवता की जानकारी, विभिन्न समुदाय की सहभागिता आदि का अध्ययन करना।
3. दंतेवाड़ा जिले का फागुन मंडई के सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व, परिवर्तन का अध्ययन करना।

अध्ययन प्रविधि

'दंतेवाड़ा जिले का फागुन मड़ई' विषय पर दंतेवाड़ा में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले फागुन मड़ई का मोनोग्राफ अध्ययन किया गया। यह फागुन या मार्च माह में दंतेवाड़ा में आयोजित होने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजन है। जिसमें बस्तर संभाग व अन्य राज्यों के देवी–देवताओं के प्रतीक, पुजारी व ग्रामीण बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।

इस अध्ययन हेतु 'फागुन मड़ई' के आयोजन में संलग्न धार्मिक प्रमुख, राजनैतिक प्रमुख, ग्रामवासियों, समिति के सदस्यों, स्थानीय शासकीय अधिकारी–कर्मचारियों, जानकार व्यक्तियों से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार, अर्ध सहभागी अवलोकन प्रविधि का उपयोग किया गया। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु असंरचित साक्षात्कार निर्देशिका तथा छायांकन हेतु डिजिटल कैमरे का उपयोग किया गया।

द्वितीयक तथ्यों का संकलन संदर्भ ग्रंथों, शासकीय प्रतिवेदनों व आयोजन समिति के पंजी तथा इंटरनेट में उपलब्ध जानकारी से किया गया।

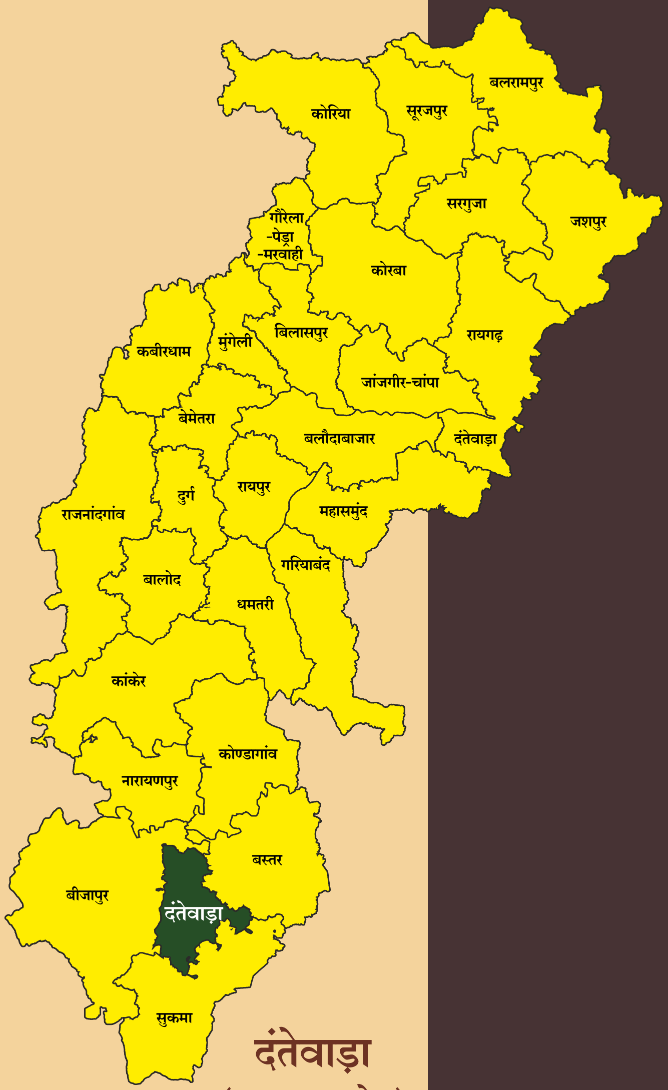

दंतेवाड़ा
(अध्ययन क्षेत्र)

दंतेवाड़ा जिला

छत्तीसगढ़ राज्य में दंतेवाड़ा जिला की स्थिति

दंतेवाड़ा जिला, छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण में स्थित है। यह जिला जनजातीय बहुलता, ऐतिहासिक, प्राकृतिक व धार्मिक क्षेत्र तथा लौह अयस्क के प्रचुर भंडार के लिये प्रसिद्ध है। दंतेवाड़ा जिला में गोंड, मुरिया, माड़िया, हल्बा, धुरवा जनजाति तथा ब्राम्हण, क्षत्रीय, राउत, कुम्हार, कलार, धाकड़, तेलंगा, महारा, तेली, महार, लोहार, सोनार आदि जाति के सदस्य निवास करते हैं। दंतेवाड़ा जिले का दंतेवाड़ा, बारसूर नगर ऐतिहासिक व धार्मिक विशिष्टता के लिये प्रसिद्ध है। दंतेवाड़ा में पूर्व बस्तर रियासत के राजपरिवार की ईष्ट दंतेश्वरी देवी का प्राचीन मंदिर है। बारसूर प्राचीन मंदिरों के कारण 'मंदिरों के नगर' के नाम से विख्यात है। दंतेवाड़ा जिले के बैलाडीला क्षेत्र में लौह अयस्क का प्रचुर भंडार है, इस क्षेत्र के लौह अयस्क का देश–विदेश में निर्यात होता है। दंतेवाड़ा जिले की सामान्य जानकारी निम्नांकित है :–

1. दंतेवाड़ा जिले की स्थापना – 25 मई 1998
2. जिला मुख्यालय – दंतेवाड़ा
3. स्थिति – $17^{0}41'52''$ से $19^{0}12'54''$ उत्तरी अक्षांश एवं $80^{0}54'42''$ से $81^{0}58'42''$ पूर्वी देशांतर।
4. जिले का क्षेत्रफल – 3410 वर्ग कि. मी.
5. औसत वार्षिक वर्षा – 1416 मि.मी.
6. तहसील की संख्या – 5
7. तहसील का नाम – दंतेवाड़ा, गीदम, कुआकोंडा, कटेकल्याण व बड़े बचेली।
8. ग्राम पंचायत की संख्या – 124
9. ग्रामों की संख्या – 234
10. आबाद ग्रामों की संख्या – 227
11. जिले की कुल जनसंख्या(वर्ष 2011 की स्थिति में) – 2,83,479
    अ. पुरूष – 140094 ब. महिला – 143385
12. लिंगानुपात – 1023
13. वर्गवार जनसंख्या
    अ. अनुसूचित जनजाति – 201458 ब. अनुसूचित जाति – 10120
14. साक्षरता दर – 41.22
    अ पुरूष – 49.92 ब. महिला – 32.71

इतिहास

दंतेवाड़ा में शंखिनी और डंकिनी नदियों के संगम स्थल के समीप दंतेश्वरी देवी का प्राचीन मंदिर स्थित है। क्षेत्र के निवासियों का धार्मिक विश्वास इसे एक सिद्ध शक्तिपीठ मानता है। ऐसी पौराणिक कथा प्रचलित है कि अपने पिता व प्रजापति दक्ष के द्वारा आयोजित यज्ञ में अपने पति भगवान शिव का अपमान बर्दाश्त न होने के कारण सती ने देह त्याग किया था। तब भगवान शिव कुपित होकर सती देवी के पार्थिव शरीर को अपने कंधे में लेकर तांडव नृत्य करते हुये पृथ्वी के चक्कर काटने लगे। उनका यह हाल देखकर देवता सब चिंता में पड़ गये थे और उन्होंने भगवान विष्णु की स्तुति की थी। तब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती देवी के पार्थिव शरीर के खण्ड–खण्ड कर दिये थे। सती देवी के दॉत के इस क्षेत्र में गिरे और जिससे दंतेश्वरी देवी प्रकट हुई।

दंतेवाड़ा में फागुन मंडई के प्रारंभ की स्पष्ट जानकारी का अभाव है। दंतेश्वरी मंदिर के मुख्य पुजारी श्री हरेन्द्रनाथ जिया के अनुसार, ''दंतेवाड़ा में फागुन मंडई का प्रारंभ बस्तर महाराजा पुरूषोत्तम देव के शासनकाल से माना जाता है।'' महाराजा पुरूषोत्तम देव का बस्तर राज्य में शासनकाल 1408–1439 तक माना जाता है। इस आधार पर यह माना जा सकता है कि दन्तेवाड़ा में फागुन मंडई लगभग 500 वर्षों से मनाया जा रहा है।

बस्तर के शासकों द्वारा प्रारंभ किया गया फागुन मंडई, बस्तर दशहरा के उपरांत दूसरा प्रमुख आयोजन है। पूर्व में बस्तर के महाराजा अपनी ईष्टदेवी की आराधना हेतु अपनी राजधानी से दंतेवाड़ा आना–जाना करते थे किंतु उनका इस क्षेत्र की स्थानीय प्रजा से सीधा संपर्क नही हो पाता था। वे क्षेत्र की प्रजा की समस्याओं, कठिनाईयों से अनिभिज्ञ रहते थे। इस प्रकार प्रजा से अलगाव तथा प्रजा में व्याप्त असंतोष का समाधान न कर पाना शासन की दृष्टि से अनुचित था। इस प्रकार क्षेत्रीय प्रजा से संवाद, संपर्क व निकटता के उद्देश्य से फागुन मंडई के आयोजन का प्रारंभ किया गया। जिसमें राजा व स्थानीय सभी जातियॉ, उनके देवी–देवता, ग्राम व परगना के मुखिया व ग्रामीणों की सहभागिता होती है। पूर्व में फागुन मंडई के अंतिम दिन बस्तर महाराजा व विभिन्न परगना से आये हुये परगना मांझी, पटेल, मुखिया के साथ बैठक का आयोजन किया जाता था। जिसमें बस्तर महाराजा उनकी समस्याओं की सुनवाई कर उसका उचित समाधान किया जाता था। इसके पश्चात् विदाई कार्यक्रम के साथ फागुन मंडई का समापन होता था।

त्रिशूल स्थापना एवं आमा मउर त्यौहार

दंतेवाड़ा का प्रसिद्ध फागुन मड़ई उत्सव का आगाज बसंत पंचमी से होता है। इस दिन दंतेश्वरी मंदिर परिसर में त्रिशूल स्थापना तथा आमा मऊर तिहार रस्म किया जाता है। इस दिन पूर्वान्ह में दंतेश्वरी मंदिर के मुख्य द्वार के सामने त्रिशूल स्थापना रस्म होता है। इस कार्यक्रम में मंदिर के मुख्य पुजारी की उपस्थिति में विधि–विधान से पूजन कर मंदिर के सेवादारों व 12 लंकवार आदि की उपस्थिति में काष्ठ स्तंभ पर लगे त्रिशूल को स्थापित किया जाता है। प्रधान पुजारी श्री हरेन्द्रनाथ जिया के अनुसार ''अष्ठधातु से निर्मित यह त्रिशूल लगभग 600 वर्ष पुराना है, जिसे तत्कालीन बस्तर महाराजा जयपुर (उड़ीसा) से लेकर आये थे।'' त्रिशूल को शक्ति का प्रतीक माना जाता है तथा फागुन मंडई उत्सव के निर्विघ्न संपन्न होने की कामना के साथ त्रिशूल स्थापना किया जाता है। मंडई समापन के उपरांत त्रिशूल को निकाल कर सुरक्षित रखा जाता है। यह फागुन मंडई का प्रथम रस्म है, इसके रस्म के साथ ही फागुन मंडई व उसकी तैयारियां प्रारंभ हो जाती है।

आमा मउर तिहार

बसंत पंचमी के दिन दोपहर में आमा मऊर की रस्म होती है। इसमें मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने दंतेश्वरी देवी का छत्र व दंड को लेकर पुजारी व अन्य सेवादार आते है। इस समय देवी के सम्मान में पुलिस बल द्वारा आवाजी कारतूसों से सलामी दिया जाता है। सलामी के उपरांत दंतेश्वरी देवी का छत्र व दंड को लेकर पुजारी, सेवादार, 12 लंकवार व अन्य उपस्थित जन, प्रशासनिक अमला जूलूस के रूप में नगर भ्रमण पर जाते हैं। इसमें मंदिर के मुख्य द्वार से होते हुए बस स्टैण्ड़ के समीप चौक तक जुलूस जाता है। वहॉ पर चौक में मुख्य मार्ग के मध्य में टेंट व टेबल लगा होता है। उस टेबल पर देवी के छत्र व विग्रहों को रखा जाता है। उपस्थित ग्राम व नगरवासी देवी का स्वागत कर नारियल, अगरबत्ती, फूल चढ़ाते हैं। इसके बाद आम का बौर देवी को अर्पित करते है। इसे "आमा मऊर" त्यौहार अर्थात् देवी को "आम का बौर" अर्पित करने का त्यौहार कहते हैं। हिंदू मान्यता के अनुसार बसंत पंचमी के दिन देवी–देवताओं की पूजा कर "आम का बौर" अर्पित करने की परंपरा है।

देवी को "आमा मऊर"अर्पित करने के बाद उपस्थित जन एक दूसरे को टीका लगाकर आम का बौर कान मे खोंचते है व एक–दूसरे के सुख, शांति व समृद्धि की कामना करते है। इसके उपरांत सभी जुलूस के रूप में वापस मंदिर में आते हैं वहां छत्र व विग्रह को "परघा" (स्वागत) कर मंदिर के अंदर ले जाते हैं। त्रिशूल स्थापना से फागुन मंडई का प्रारंभ माना जाता है तथा "आमा मऊर" त्यौहार के लिये देवी छत्र का नगर भ्रमण का उद्देश्य नगर व क्षेत्रवासियों को फागुन मंडई के आगाज की सूचना देना है।

फागुन मंडई

फागुन मंडई, बस्तर दशहरा के पश्चात् बस्तर क्षेत्र का द्वितीय प्रमुख धार्मिक आयोजन है। इसमें राज परिवार, पूर्व प्रशासनिक क्षेत्र जैसे– ग्राम, परगना के धार्मिक व राजनीतिक प्रमुख, देवी–देवता के विग्रह, पुजारी व अन्य सेवादार व क्षेत्रीय नागरिक शामिल होते हैं। इस प्रकार इस धार्मिक–राजनीतिक आयोजन के माध्यम से तत्कालीन राज परिवार व क्षेत्रीय जनता के मध्य संवाद, सूचना प्राप्ति तथा समाधान का समावेश होता था। बस्तर के जनजातीय क्षेत्र में प्रायः होली उत्सव नही मनाया जाता है किंतु यह समय जनजातीय क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाओं की दृष्टि से रिक्त काल माना जा सकता है। इस समय क्षेत्र में आर्थिक व सामाजिक गतिविधियां कम होती हैं। संभवतः उक्त परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुये फागुन मास में होली पर्व के साथ संयुक्त रूप से दंतेवाड़ा में फागुन मंडई का आयोजन प्रारंभ किया गया होगा। वर्ष 2021 के फागुन मंडई का कार्यक्रम विवरण इस प्रकार है।

फागुन मंडई का कार्यक्रम विवरण, वर्ष 2021

क्र.	दिनांक	दिन	तिथि	पालकी	कार्यक्रम	समय
1.	20.03.2021	शनिवार	सप्तमी	प्रथम पालकी	कलश स्थापना	प्रातः 11.00 बजे से
2.	21.03.2021	रविवार	अष्टमी	द्वितीय पालकी	ताड़ पलंगा धोनी	रात्रि 8.00 बजे से
3.	22.03.2021	सोमवार	नवमीं	तृतीय पालकी	खोरखुंदनी	रात्रि 9.00 बजे से
4.	23.03.2021	मंगलवार	दशमी	चतुर्थ पालकी	नाच मांडनी	रात्रि 10.00 बजे से
5.	24.03.2021	बुधवार	एकादशी	पंचम पालकी	लम्हामार	रात्रि 1.00 बजे से
6.	25.03.2021	गुरूवार	द्वादशी	षष्टम पालकी	कोडरीमार	रात्रि 2.00 बजे से
7.	26.03.2021	शुक्रवार	त्रयोदशी	सप्तम पालकी	चितलमार	रात्रि 3.00 बजे से
8.	27.03.2021	शनिवार	चतुर्दशी	अष्ठम पालकी	गंवरमार एवं गारी कार्यक्रम	रात्रि 4.00 बजे से
9.	28.03.2021	रविवार	पूर्णिमा	नवम् पालकी	आंवरामार, होलिका दहन	रात्रि 7.00 बजे से
10.	29.03.2021	सोमवार	प्रतिपदा		रंग–भंग, पादुका पूजन	प्रातः 10.00 बजेसे
11.	30.03.2021	मंगलवार	द्वितीया		विश्राम	
12.	31.03.2021	बुधवार	तृतीया		मेला मंडई	दोपहर 2.00 बजे से
13.	01.04.2021	गुरूवार	चतुर्थी		देवी–देवताओं की विदाई	प्रातः 10.00 बजेसे

दंतेवाड़ा के फागुन मंडई के विभिन्न रस्मों व विधान का विवरण इस प्रकार है -

कलश स्थापना एवं पालकी विधान

फागुन मंडई के मुख्य आयोजन का आरंभ फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि से होता है। इस दिन प्रथम पहर में दंतेश्वरी देवी के मुख्य मंदिर में विधि विधान से पूजन के उपरांत देवी के छत्र को मंदिर के मुख्य द्वार पर पुलिस बल द्वारा सलामी दिया गया। इसके बाद बाजे–गाजे के साथ जुलूस के रूप में समीप के मेंडका डोबरा मैदान स्थित मंदिर में ले जाते हैं। मेंडका डोबरा मैदान में स्थित देवगुड़ी में छत्र को प्रतिस्थापित कर परंपरानुसार कलश स्थापना किया जाता है। कलश स्थापना का रस्म ब्राहमण द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। इस दौरान दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी, सेवादार, 12 लंकवार आदि उपस्थित होते हैं।

मेंडका डोबरा मैदान में छत्र स्थापना "पारद" (शिकार) के प्रसंग से जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि पूर्व काल में जब दंतेश्वरी देवी शिकार के लिए निकलीं थी तो उन्होनें मेंडका डोबरा मैदान (पूर्व में वन क्षेत्र) में शिकार किया था। इस कारण फागुन मंडई हेतु इस मैदान में स्थित गुड़ी (मंदिर) में देवी का छत्र स्थापित किया जाता है तथा फागुन मंडई आयोजन के दौरान रात्रि में विभिन्न वन्य जीवों के शिकार का स्वांग नृत्य प्रदर्शन किया जाता है।

फागुन मंडई में फागुन मास की सप्तमीं से पूर्णिमा तिथि अर्थात् नौ दिनों तक दुर्गा देवी के नौ रूपों शैलपुत्री, ब्रम्हचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री देवी की पूजा किया जाता है तथा इन नौ दिनों तक दंतेश्वरी व भुवनेश्वरी देवी की पालकी का भ्रमण कराया जाता है।

कलश स्थापना के दिन सप्तमीं से पूर्णिमा तिथि तक नौ दिन तक से प्रतिदिन शाम को नियत समय में दंतेश्वरी देवी व भुवनेश्वरी देवी की डोली, विग्रह व अन्य देवी–देवताओं के लाट, छत्र व अन्य विग्रह को दंतेश्वरी देवी के मुख्य मंदिर से दंतेश्वरी तरई या माता तरई के किनारे स्थित नारायण मंदिर तक पालकी भ्रमण कराया जाता है। इसके अंतर्गत दंतेश्वरी देवी मंदिर के मुख्य द्वार पर डोली, विग्रह को निकालने के पश्चात् पुलिस जवानों की टुकड़ी द्वारा सलामी दिया जाता है। इसके बाद जुलूस में सबसे पहले बारह लंकवार में से मादरी परंपरागत बाजा–मोहरी वादक दल, उसके बाद दंतेश्वरी देवी की स्तुति गायन व वादन करने वाले मुंडा दल तत्पश्चात् देवी की डोली या पालकी, सेवादार, लंकवार, आमंत्रित देवी–देवताओं के लाट, छत्र व अन्य देव विग्रह होते हैं। यह जुलूस दंतेश्वरी मंदिर परिसर से दंतेश्वरी तरई या माता तरई के किनारे स्थित नारायण मंदिर तक जाता है। मंदिर परिसर में स्थित भवन में डोली व अन्य देव विग्रहों को रखा जाता हैं व पुलिस जवानों की टुकड़ी द्वारा आवाजी कारतूस से सलामी दिया जाता है। नारायण मंदिर में विधिवत् पूजा किया जाता है।

इसी दौरान चांदी के दो कलश में माई तरई या माई तालाब से राउत जाति का सदस्य जल निकाल कर हल्बा जाति के नाईक को देता है। जिसे लेकर वह दंतेश्वरी मंदिर जाता है। इसके पश्चात् नारायण मंदिर से पालकी की दंतेश्वरी मंदिर में वापसी होती है। मंदिर के मुख्य द्वार पर पुलिस जवानों द्वारा सलामी दिया जाता है। इसके बाद पुजारी द्वारा माई तरई या माई तालाब से कलश में लाये गये जल से डोली को शुद्ध कर आरती करता है व डोली को मंदिर के भीतर ले जाते हैं। यही प्रक्रिया भुवनेश्वरी देवी की डोली के साथ दुहराया जाता है। यह रस्म पूर्ण होने के उपरांत विभिन्न ग्रामों से आये देवी–देवताओं के विग्रह को मेंडका डोबरा स्थित गुड़ी के परिसर में ले जाकर रख दिया जाता है।

ताड़ पलंगा धोनी

फागुन अष्टमी के दिन द्वितीय पालकी परंपरानुसार पूजन व सलामी के उपरांत नारायण मंदिर तक जुलूस के रूप में निकाला जाता है। इस दिन फागुन मंडई की दूसरा रस्म 'ताड़ फलंगा धोनी' रस्म होता है। इस रस्म हेतु ताड़ वृक्ष के पत्तों को काटकर लाते है। पालकी भ्रमण जुलूस में दो लंकवार ताड़ के पत्तों को लेकर जाते हैं। हल्बी मे ताड़ के पत्तों को धोने के रस्म को 'ताड फलंगा धोनी' कहा जाता है। पालकी के नारायण मंदिर में ठहरने के दौरान ताड़ के पत्तों को दंतेश्वरी तरई या माई तरई में मंदिर के 'भंडारी' द्वारा पूजन कर विधिवत धोया जाता है तथा पालकी के साथ ताड़ पत्तों को दंतेश्वरी मंदिर वापस लाकर पूजा–आरती करके मंदिर परिसर में स्थित भैरम देव के मंदिर में सुरक्षित रखा जाता है। इन्ही ताड़ के पत्तों से होलिका दहन किया जाता है। ताड़ पलंगा रस्म में लाये गये ताड़ के पत्तों से लम्हामार रस्म में खरगोश का कान बनाया जाता है।

खोरखुंदनी

फाल्गुन शुक्ल की नवमीं तिथि को फागुन मंडई की खोरखुंदनी रस्म का कार्यक्रम होता है। इस दिन परंपरानुसार देवी पूजन व सलामी कार्यक्रम के उपरांत देवी की पालकी, देव विग्रहों को लेकर वादक व गायक समूह तथा नागरिकों का नारायण मंदिर तक तृतीय पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है। नारायण मंदिर से पालकी की दंतेश्वरी मंदिर में वापसी की रस्म पूर्ण होने के उपरांत विभिन्न ग्रामों से आये ग्रामीण अपने–अपने देवी–देवताओं के विग्रह को मेंडका डोबरा स्थित गुड़ी के परिसर में ले जाकर रखते हैं। इसके बाद बारह लंकवार बांस से निर्मित दो "टाकरा" (परात) में चांवल को रख कपडे में ढंक कर मेंडका डोबरा स्थित गुड़ी में जाते हैं, वहां दंतेश्वरी देवी के समक्ष"टाकरा" (परात) को रखकर देवी को चांवल अर्पित किया जाता है। सभी बारह लंकवार देवी को प्रणाम करते हैं व "टाकरा" (परात) को लेकर दंतेश्वरी देवी के मुख्य मंदिर में वापस आते हैं तथा मंदिर के मुख्य द्वार पर "टाकरा" (परात) को रख देते हैं। इसके बाद "टाकरा" (परात) में रखे चांवल को मादरी या बाजा–मोहरी वादकों के समूह को बांट दिया जाता है।

नाच मांडनी

फाल्गुन शुक्ल की दसवीं तिथि को फागुन मंडई की चतुर्थ पालकी व नाच मांडनी कार्यक्रम होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है। इस दिन से रात्रि में नृत्य–गीतों का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। इस कड़ी में नाच मांडनी रस्म के तहत कलार और कुम्हार जातियों के लोग नृत्य में भाग लेते है। यह कार्यक्रम रात्रि 10 बजे से प्रारंभ होता है। इसके अगले दिन से रात्रि में शिकार नृत्य का कार्यक्रम प्रारंभ हो जाता है। इसके आयोजन का समय अर्धरात्रि से सुबह की ओर क्रमशः बढ़ता जाता है।

यह माना जाता है कि पूर्व में फागुन मंडई में विभिन्न गांवों से आने वाले देवी–देवता व उनके पुजारी, सेवादार व ग्रामीणों की बड़ी संख्या तथा इस आयोजन की लंबी अवधि को दृष्टिगत रखते हुये मनोरंजन हेतु शिकार व नृत्य के संयुक्त स्वरूप में शिकार नृत्य का आयोजन किया जाने लगा। जिसका प्रारंभ नाच मांडनी रस्म से होता है।

लम्हामार

फाल्गुन शुक्ल की एकादशी तिथि को फागुन मंडई की पंचम पालकी व लम्हामार कार्यक्रम होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है व रात्रि में लम्हामार शिकार नृत्य की प्रस्तुति होती है। इस दिन से रात्रि में नृत्य–गीतों का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। इन नृत्य कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि प्रथम दिन के शिकार नृत्य से अंतिम दिन के शिकार नृत्य तक क्रमशः बड़े आकार व बड़े सींग के वन्य पशु के शिकार का दृश्य नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

फागुन मंडई के दौरान शिकार नृत्य परंपरा अपने आप में अनूठी है। अन्य स्थल में इस प्रकार की परंपरा दुर्लभ है। फागुन मंडई में शिकार नृत्य परंपरा पर ख्याति प्राप्त साहित्यकार लाला जगदलपुरी ने "बस्तरः इतिहास एवं संस्कृति" (1994) ग्रंथ में उल्लेख किया है कि, "रियासती शासन काल में राजा प्रजा प्रायः सभी आखेट के शौकीन होते थे। शिकारी तब लमहा (खरगोश), कोडरी, चीतल और गॉवर का आखेट अक्सर बड़े चाव से करते थे, क्योंकि इन पशुओं के आखेट से उन्हें रूचिकारक मांसाहार प्राप्त होता था। उसी विगत शिकार प्रथा की यादगार को संभवतः ''लमहा मार'', ''कोडरी मार'', ''चीतल मार'' और ''गौरमार'' नृत्यों में सुरक्षित कर लिया गया है। भीड़–भाड़ शोर–शराबे, बाजे–गाजे और ताम–झाम के साथ नियत समय पर निश्चित जगह ''लमहा मार'' का कार्यक्रम प्रांरभ हो जाता है। एक आदमी ''लमहा'' (खरगोश) बनता है और खरगोश पात्र को, कार्यक्रम में भाग लेने वाले शिकारी पात्र धीरे–धीरे अपने जाल में फॅसा लेते हैं और कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि लम्हामार नृत्य में नृत्य के माध्यम से खरगोश के शिकार दृश्य को जीवंत किया जाता है। लम्हामार नृत्य में खरगोश का शिकार दर्शाया जाता है। इसमें नृत्य के दौरान हंडी में आग जलाते है व शिकार हेतु जंगल का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। आग की हंडी को लेकर एक व्यक्ति चलता है, जिसे देखकर खरगोश पीछा करता है। इस प्रकार नृत्य के दौरान मेंडका डोबरा में सात राउंड खरगोश को घुमाते हैं फिर उसका शिकार करते हैं। दर्शकों के लिये यह शिकार नृत्य बेहद मनोरंजक होता है।

कोडरीमार

फाल्गुन शुक्ल की द्वादशी तिथि को फागुन मंडई की षष्ठम पालकी व कोडरीमार कार्यक्रम होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है व रात्रि में कोडरीमार शिकार नृत्य की प्रस्तुति होती है।

कोडरीमार नृत्य में नृत्य के माध्यम से कोडरी पशु के शिकार दृश्य को जीवंत करते हुये उपस्थित जनों का मनोरंजन किया जाता है।

चितलमार

फाल्गुन शुक्ल की त्रयोदशी तिथि को फागुन मंडई की सप्तम पालकी व चितलमार कार्यक्रम होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है व रात्रि में चितलमार शिकार नृत्य की प्रस्तुति होती है।

चितलमार नृत्य में नृत्य के माध्यम से चीतल के शिकार दृश्य को जीवंत करते हुये उपस्थित जनों का मनोरंजन किया जाता है।

गंवरमार एवं गारी कार्यक्रम

फाल्गुन शुक्ल की चतुर्दशी तिथि को फागुन मंडई की अष्ठम पालकी व गंवरमार कार्यक्रम होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है। इस दिन बस्तर महाराजा पालकी भ्रमण कार्यक्रम में शामिल होते हैं। वे पालकी के साथ नारायण मंदिर जाते हैं। वे पालकी भ्रमण और पूजन कार्यक्रम में शामिल होते हैं।

रात्रि में गंवरमार अर्थात् वनभैंसा शिकार नृत्य की प्रस्तुति होती है। गंवरमार नृत्य में नृत्य के माध्यम से गंवर अर्थात् वनभैंसा के शिकार दृश्य को जीवंत करते हुये उपस्थित जनों का मनोरंजन किया जाता है।

चतुर्दशी तिथि में दंतेवाड़ा की फागुन मंड़ई में शाम को ''गारी कार्यक्रम'' होता है। ''गारी कार्यक्रम'' में पूरे शोरगुल से भरपूर वातावरण में गाली के शब्द बोले जाते है।

आंवरामार

फाल्गुन शुक्ल की पूर्णिमा को फागुन मंडई की नवम पालकी, आंवरामार तथा होलिका दहन होता है। इसमें संध्याकाल में विधिपूर्वक पालकी भ्रमण कार्यक्रम होता है। इस समय तक फागुन मंडई में जनसहभागिता, उमंग व उत्साह अपने चरम में पहुंच जाता है।

नवमी पालकी के दिन पालकी भ्रमण से दंतेश्वरी मन्दिर वापसी के दौरान मुख्य मार्ग पर जयस्तंभ चौक में मन्दिर के सेवादार और बारह लंकवारों के मध्य आंवरामार रस्म होता है। इसमें दोनों समूह को आंवरा बांट दिया जाता है। फिर दोनों समूह एक–दूसरे को आंवले से मारते हैं। बारी–बारी से दोनों समूह एक–दूसरे को दौड़ाकर आंवले से मारते हैं। जिसे आंवले की मार लगती है वो अपने को भाग्यशाली मानता है। ऐसी मान्यता है कि जिसे आंवले की मार लगती है वह पूरे वर्ष मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है। इसके बाद मंदिर के सम्मुख फिर से यह रस्म दुहरायी जाती है। यह रस्म पूरे माहौल की बेहद खुशनुमा, उत्साहपूर्ण एवं मनोरंजक बना देता है।

होलिका दहन

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को रात्रि में होलिका दहन का कार्यक्रम होता है। फागुन मंडई का होलिका दहन कार्यक्रम की पृष्ठभूमि होलिका पर आधारित न होकर स्थानीय राजकुमारी के प्राणोत्सर्ग पर आधारित है। स्थानीय शनि मंदिर के पास सतीशिला के समीप ताड़ पत्ते, बांस, पलाश, साल आदि लकड़ियों से होलिका दहन किया जाता है। सतीशिला के संदर्भ में यह कथा प्रचलित है कि बस्तर की एक राजकुमारी ने किसी आक्रमणकारी से अपनी अस्मिता बचाने के लिए स्वयं अग्निदाह कर लिया था। अपने सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए बलिदान करने वाली राजकुमारी की याद में "ताड़ पलंगा धोनी" रस्म में पूजन कर दंतेश्वरी मंदिर परिसर के भैरम मंदिर में रखे गए ताड़ पत्रों को होलिका दहन हेतु सती शिला के पास लाया जाता है। होलिका दहन हेतु विधिपूर्वक ताड़ पत्तों व लकड़ियों को रखने के पश्चात् दंतेश्वरी मंदिर के प्रधान पुजारी होलिका की पूजा करते हैं। पूजन उपरांत बारह लंकवार में से पंडाल परिवार के सदस्य होली प्रज्वलित करते हैं।

होलिका दहन के संबंध में एक अन्य जानकारी में दंतेश्वरी मंदिर के प्रधान पुजारी के अनुसार पूर्व में बस्तर रियासत में प्रथम होलिका दहन दंतेवाड़ा में होने के उपरांत पंडाल जाति के सदस्य मोटी रस्सी में आग लगाकर घोड़े से जगदलपुर जाते थे व इसी आग से जगदलपुर के पूर्व दिशा में लगभग दस कि.मी. की दूरी पर स्थित माड़पाल नामक स्थान पर होलिका दहन होता था। यह परंपरा दंतेवाड़ा से जगदलपुर की दूरी व आवागमन में समस्या के कारण लगभग 100–150 वर्ष पूर्व समाप्त हो चुकी है।

होलिका दहन के बाद पंडाल सबको राख देता है जिसे लेकर सभी आते हैं व दंतेश्वरी मंदिर के प्रवेश द्वार के समीप एक–दूसरे को तिलक लगाते हैं।

रंग-भंग

होलिका दहन के दूसरे दिन रंग–भंग उत्सव मनाया जाता है। इस दिन सुबह दंतेश्वरी मंदिर के प्रधान पुजारी दंतेश्वरी देवी की पूजा कर पलाश अर्थात् टेसू के फूलों से बने रंग व गुलाल अर्पित किया जाता है। बारह लंकवार व सेवादार मंदिर में एकत्र होकर देवी के द्वार में गुलाल अर्पित करते हैं। इसके बाद पलाश (टेसू) के फूलों के रंग, होलिका दहन की राख से होली खेली जाती है। दंतेश्वरी मंदिर में वाद्य यंत्र बजाने वाले एक सेवादार को दंतेश्वरी देवी की डोली के पलाश अर्थात् टेसू फूलों से सजाकर भैरव का रूप दिया जाता है। इसके बाद भैरव, सेवादार, बारह लंकवार व उपस्थित जन मिलकर रंग–गुलाल से होली खेलते हैं। सेवादार और बारह लंकवार के कुछ सदस्य राजकुमारी की स्मृति में दंतेश्वरी मंदिर परिसर से एकत्र की गई मिट्टी को एक–दूसरे फेंक कर होली खेलते हैं।

इसके बाद सभी होली खेलते हुये होलिका दहन स्थल जाते हैं। वहां होलिका स्थल की पूजा किया जाता है। पंडाल व चालकी होलिका दहन की राख को बारह लंकवार व उपस्थित जनों को बांटते हैं। इसके बाद बारह लंकवार मेंडका डोबरा मैदान में आकर विभिन्न ग्रामों से आये हुये देवी–देवता के छत्र, लाट, डोली को राख का टीका लगाते हैं।

पादुका पूजन

रंग–भंग उत्सव के बाद सभी लोग दंतेश्वरी मदिर के पीछे स्थित शंकनी व डंकनी नदी के संगम में स्नान करते हैं। क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि शंकनी–डंकनी नदी के संगम में स्नान करने से प्रेत बाधा, तंत्र–मंत्र के प्रभाव से मुक्ति मिलती है। दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी द्वारा संगम स्थल पर पत्थर में बने भैरव देव के पद चिन्ह का नियमपूर्वक पादुका पूजन कर जल चढ़ाया जाता है। फागुन मंडई के आंवरामार रस्म में सभी जाति के सदस्यों की सहभागिता होती है व एक–दूसरे को आंवला मारते हैं, इसलिये भैरव पूजन के बाद पुजारी बारह लंकवार, सेवादार व अन्य उपस्थित जन को चरणामृत जल देता है। जिसे वे ग्रहण कर व शरीर में छिड़क कर शुद्ध होते हैं। इसके बाद सभी पुजारी के घर आते हैं। वहां बैठक होता है व फागुन मंडई की समीक्षा करते हैं। अगला दिन विश्राम होता है।

मेला मंडई

फागुन मंडई में रंग भंग व पादुका पूजन के बाद मेला मंडई का कार्यक्रम होता है। इस दिन बस्तर महाराजा की उपस्थिति में देव परिक्रमा, बलि व मेला मंडई होता है। इस दिन दंतेश्वरी देवी व भुवनेश्वरी देवी के सोने का छत्र निकाला जाता है। विशाल जनसमुदाय, विभिन्न ग्रामों से आये देवी–देवताओं के प्रतीक, नर्तक दल, वादक दल, गायक दल की उपस्थिति में सशस्त्र पुलिस जवानों द्वारा आवाजी कारतूसों से सलामी दिया जाता है। इसके बाद अद्भुत देव परिक्रमा का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। जिसमें दंतेश्वरी देवी के मुख्य पुजारी जिया पालकी नुमा कुर्सी (जिसे चार व्यक्ति कंधे में उठाकर चलते हैं) में बैठकर दंतेश्वरी देवी व भुवनेश्वरी देवी के सोने का छत्र पकड़ते हैं। बस्तर महाराजा वाहन में सवारी करते हैं इसके बाद बस्तर, उड़ीसा क्षेत्र के ग्रामों से आये लगभग 800 देव प्रतीकों का लंबा जुलूस होता है। यह जुलूस देव परिक्रमा के लिये दंतेश्वरी देवी मंदिर से पुराना बाजार जाकर एक परिक्रमा, बस स्टैंड के पास दो परिक्रमा तथा मेंडका डोबरा मैदान में दो परिक्रमा करते हैं। इसके बाद मंदिर वापस आते हैं। मंदिर में सम्मानपूर्वक स्वागत, सलामी व आरती के उपरांत देवियों के छत्र को वापस यथा स्थान रखा जाता है। विभिन्न ग्रामों से आये देव प्रतीकों को मेंडका डोबरा मैदान में ससम्मान रखा जाता है। इस प्रकार फागुन मंडई की मुख्य रस्म सम्पन्न होता है।

देवी देवताओं की विदाई

फागुन मंडई के अंतिम दिवस देवी–देवताओं का विदाई कार्यक्रम होता है। पूर्व में यह विदाई दिवस अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उद्देश्य पूर्ण होता था। यह पर्व बस्तर रियासत के दूरस्थ क्षेत्रों में बसे विभिन्न समुदायों को धार्मिक रूप से जोड़ने व राजनीतिक प्रमुखों से उस क्षेत्र की समस्याओं को ज्ञात करने व उनके उचित समाधान से जुड़ा है। यह पर्व बस्तर रियासत की राजनीतिक– धार्मिक एकता व सामाजिक समरसता बनाये रखने में बेहद उपयोगी था। पूर्व में विदाई के दिन बस्तर महाराजा की उपस्थिति में सभा का आयोजन किया जाता था। बस्तर रियासत के दरबारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहते थे। इस सभा में विभिन्न ग्रामों से आये हुये परगना मांझी, चालकी, पुजारी, पटेल आदि परंपरागत ग्राम व परगना स्तरीय राजनीतिक–धार्मिक मुखिया की सहभागिता होती है। वे राजा के समक्ष अपनी समस्या, क्षेत्र में घटित घटना, महामारी, संकट आदि का विवरण प्रस्तुत करते थे, जिसका राजा समाधान करता था। इसके बाद राजा की उपस्थिति में ग्रामवासियों के दल प्रमुखों को वस्त्र, रूपये व स्मृति चिन्ह देकर विदा करते थे। दंतेश्वरी मंदिर के मुख्य पुजारी के अनुसार यह परंपरा बस्तर महाराजा स्व. प्रवीरचंद्र भंजदेव तक जारी रही। वर्तमान में राज्य सरकार के मंत्री अथवा विधायक, जिले के कलेक्टर, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), तहसीलदार की उपस्थिति में इस परंपरा का निर्वहन होता है।

विदाई कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद सभी ग्रामीण अपने–अपने देवी–देवताओं के प्रतीक के साथ–साथ फागुन मंडई में आने की आशा के साथ अपने गांव, घर की ओर रवाना होते है।

व्यवस्था एवं संचालन

दंतेवाड़ा का फागुन मंडई वृहद स्तर का आयोजन है। यह आयोजन पूर्व में बस्तर रियासत के अधीन था, दिनांक 1 अक्टूबर 1957 को दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिर तथा कुछ मंदिरों को शासन के अधीन लिया गया। जिसमें शासन की अधिसूचना पश्चात दंतेश्वरी मंदिर, भुवनेश्वरी मंदिर, शीतलामाता मंदिर, शिव मंदिर, नारायण मंदिर, भैरव मंदिर तथा कटेकल्याण स्थित दंतेश्वरी मंदिर शामिल है।

दंतेश्वरी मंदिर एवं इसके अधीन 6 मंदिरों हेतु 2 पुजारी एवं 19 सेवादार नियुक्त है। पुजारी, सेवादार वंशानुगत रूप से मंदिर में सेवा दे रहे हैं। दंतेश्वरी मंदिर के नाम पर दंतेवाड़ा में 33.74 एकड़, पुरनतरई में 13.33 एकड़, गीदम में 01.99 एकड़ तथा कटेकल्याण में 24 डिसमिल भूमि है।

इन मंदिरों के व्यवस्था एवं संचालन कार्य टेंपल एस्टेट कमेटी द्वारा किया जाता है, जिसमें अध्यक्ष जिला कलेक्टर तथा सचिव, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) व व्यवस्थापक तहसीलदार दंतेवाड़ा पदेन पदाधिकारी तथा सदस्य गण होते हैं। फागुन मंडई वर्ष–2021 हेतु दंतेवाड़ा के पदाधिकारियों का विवरण निम्नांकित है –

अध्यक्ष टेम्पल एस्टेट दंतेवाड़ा - कलेक्टर, जिला–दंक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा

सचिव - अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), दंतेवाड़ा

व्यवस्थापक - तहसीलदार दंतेवाड़ा

प्रधान पुजारी - श्री हरेन्द्र नाथ जिया, दंतेश्वरी मंदिर, दंतेवाड़ा

सहायक पुजारी - श्री लोकेन्द्र नाथ जिया, दंतेश्वरी मंदिर, दंतेवाड़ा

सदस्य गण

बारह लंकवार - श्री ईतवारी राम नाईक, श्री सुरेन्द्र समरथ, श्री जगदीश बोड़का, श्री शिवचंद कतियार, श्री परदेशी पंडाल, श्री मेहत्तर राम बगड़ीत, श्री धरम सिंह सेठिया, श्री रामलाल मादरी, श्री सरजू चालकी, श्री पनकूराम पुजारी, श्री रामलाल गायता, श्री सुकदास कुम्हार।

मांझी - श्री अर्जुन कर्मा (फरसपाल), श्री लक्ष्मीनाथ (कुआकोंडा), श्री विरो सिंह (बचेली), श्री प्रेमलाल (तुड़पारास), श्री कुहरामी हिड़मा (कटेकल्याण)।

चालकी - श्री भोंदूराम (छोटे गुडरा), श्री रमेश चालकी (मांझीपदर)।

पटेल - श्री त्रिनाथ सिंह ठाकुर, श्री भगत सिंह, श्री पूरन सिंह पटेल।

सदस्य - श्री विजय प्रसाद तिवारी (गीदम), श्री चैतराम अटामी (कोसोली), श्री सत्यनारायण ठाकुर (दंतेवाड़ा), श्री अर्जुन भास्कर (बचेली), श्री नंदलाल मुड़ामी (पालनार), श्री जगत पुजारी (बारसूर), श्री अर्जुन मांझी (फरसपाल), श्री धरम सेठिया (दंतेवाड़ा), श्री मुकेश शर्मा(दंतेवाड़ा), श्री प्रशांत अग्रवाल (दंतेवाड़ा), श्री कुलदीप सिंह ठाकुर (बालूद), श्री दुर्गा सिंह चौहान (दंतेवाड़ा)।

कार्यकर्ता - श्री बैजनाथ समरथ, श्री कुंवर सिंह पुजारी, श्री बलीराम सेठिया, श्री लच्छिन्दर बड्डे, श्री बुधराम गायता, श्री मधुशंकर सेठिया, श्री कपूरचंद, श्री चैन सिंह भंडारी, श्री एस. आर. नाग, श्री मुकुंद सिंह ठाकुर, श्री डी. आर. नाग, श्री झगडूराम।

फागुन मंडई में व्यवस्था, भोजन, तैयारी, सामग्री आदि में बड़ी धनराशि व्यय होती है। इस धनराशि की व्यवस्था मंदिर में प्राप्त दान राशि तथा एन. एम. डी. सी. परियोजना किरंदुल से प्राप्त सहयोग राशि से किया जाता हैं। फागुन मंडई वर्ष 2020 के आयोजन में आय–व्यय का विवरण इस प्रकार है।

फागुन मंड़ई वर्ष 2020 में आय-व्यय का विवरण -

क्र.	विवरण	राशि
	आय	
1	एन. एम. डी. सी. परियोजना किरन्दुल से प्राप्त सहयोग राशि	19,82,484.00
2	मंदिर में प्राप्त दान राशि से व्यय	11,99,767.00
	योग	**31,82,251.00**
	व्यय विवरण	
1	राशन व्यय	18,15,435.00
2	सांस्कृतिक कार्यक्रम (स्थानीय लोक नाट्य एवं पारम्परिक लोक नृत्य)	3,14,000.00
3	प्रचार–प्रसार सामग्री (पोस्टर, पाम्पलेट, आमंत्रण कार्ड, फ्लैक्स)	72,372.00
4	टेंट, लाईट एवं सजावट	2,36,500.00
5	रंगाई–पोताई एवं प्रकाश व्यवस्था	48,145.00
6	विदाई हेतु नेंग सामग्री (पीतल कसेला, धोती, गमछा, पगड़ी, साड़ी, नारियल, गुल्लक)	3,35,836.00
7	मजदूरी	1,80,840.00
8	विभिन्न (निविदा प्रकाषन, पूजन सामग्री, बस्तर महाराजा के आगमन पर व्यवस्था, विदाई हेतु वाहन किराया, षौचालय मरम्मत आदि)	1,79,123.00
	योग	**31,82,251.00**

उपरोक्त पत्रक में फागुन मंडई वर्ष 2020 के आयोजन में आय–व्यय विवरण दर्शाया गया है। वर्ष 2020 के आयोजन में एएमएनएस परियोजना किरन्दुल से प्राप्त सहयोग राशि 19,82,484.00 तथा मंदिर में प्राप्त दान राशि में से 11,99,767.00 रूपये कुल 31,82,251.00 रूपये का व्यय फागुन मंडई में किया गया। इस राशि को राशन व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रचार–प्रसार सामग्री, टेंट, लाईट एवं सजावट, रंगाई–पोताई एवं प्रकाश व्यवस्था, विदाई हेतु नेंग सामग्री, मजदूरी तथा अन्य कार्यों में व्यय किया गया।

वर्ष 2021 के फागुन मंडई आयोजन में कोविड–19 के संक्रमण के कारण लॉकडाउन व संक्रमण फैलने के आशंका के कारण फागुन मंडई का आयोजन बीच में रोकना पड़ा तथा देवी–देवताओं व ग्रामीणों की विदाई कर दिया गया। फागुन मंडई के शेष आयोजनों को प्रतीकात्मक रूप से कोविड–19 के दिशा–निर्देशों का पालन कर पूर्ण किया गया।

निष्कर्ष

फागुन मंडई, छत्तीसगढ़ राज्य के दंतेवाड़ा जिला मुख्यालय में लगभग 500 वर्ष पूर्व से मनाया जाने वाला प्रमुख व विशाल ऐतिहासिक धार्मिक पर्व है। यह बस्तर राज परिवार की अधिष्ठात्री दंतेश्वरी देवी, भुवनेश्वरी देवी (मावली देवी) व अन्य देवी–देवताओं की विशेष पूजा, धार्मिक अनुष्ठान, होली पर्व का कार्यक्रम है। बसंत पंचमी से प्रारंभ होने वाले इस 45 दिवसीय आयोजन में अंतिम 13 दिवसीय कार्यक्रम प्रमुख होते हैं।

दंतेवाड़ा का फागुन मंडई पर्व देवी उपासना, ग्राम क्षेत्रों के देवी–देवताओं का समागम तथा होली का संयुक्त पर्व है। जिसमें नौ दिनों तक दुर्गा देवी के नौ रूपों की उपासना किया जाता है तो दूसरी ओर दंतेश्वरी व भुवनेश्वरी देवी (मावली देवी) का पालकी भ्रमण व देवी परिक्रमा के कार्यक्रम होते हैं। इस दीर्घकालीन आयोजन की एकात्मकता को रसपूर्ण बनाने के लिये रात्रिकाल में मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं। फागुन मंडई के उपरोक्त सभी आयोजन विशिष्टता लिये हुये हैं।

फागुन मंडई के विविध आयोजन में पारंपरिक धार्मिक–आध्यात्मिक मान्यताओं में स्थानीयता व ऐतिहासिकता का समावेश है। जिसकी झलक देवी पूजन, पालकी भ्रमण, देव परिक्रमा तथा होलिका दहन जैसे कार्यक्रमों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। यह आयोजन बस्तर रियासत के देवी–देवताओं तथा स्थानीय देवी–देवताओं के सम्मिलन का प्रतीक है। ग्राम्य क्षेत्र में यह मान्यता है कि बस्तर राज देवियां दंतेश्वरी देवी तथा भुवनेश्वरी देवी (मावली देवी) सर्वोच्च तथा शक्तिशाली हैं। उनके आराधना व सम्मान हेतु आयोजित बस्तर दशहरा तथा दंतेवाड़ा का फागुन मंडई में उनके ग्राम्य देवी–देवता शामिल होने से उनकी शक्ति में वृद्धि होती है तथा उनके ग्राम्य देवी–देवता शक्तिशाली होते हैं।

फागुन मंडई के आयोजनों में सामूहिकता के दर्शन होते हैं। इस आयोजन के विभिन्न रस्मों व अनुष्ठानों में प्रत्येक जाति या समुदाय के कर्त्तव्य व भूमिका सुस्पष्ट है। जिसमें मंदिर के पुजारी व बारह लंकवार के कर्त्तव्य व भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

फागुन मंडई, पूर्व बस्तर रियासतके प्रशासन व दूरस्थ क्षेत्रों में बसे ग्रामों की समस्याओं की जानकारी व समाधान से जुड़ा है। यह बस्तर रियासत की राजनीतिक–धार्मिक एकता, सामाजिक समरसता तथा संवाद व संपर्क बनाये रखने में बेहद उपयोगी था।

बस्तर के रियासत काल से आयोजित फागुन मंडई वर्तमान में दंतेवाड़ा की दंतेश्वरी देवी के उपासना के लोक पर्व के रूप में स्थापित हो चुका है। इसमें समयानुरूप आयोजन संबंधी अनेक परिवर्तन हुये हैं किंतु इस पर्व की मूल भावना, लोक विश्वास तथा जनसहभागिता निरंतर यथावत है।

परिशिष्ट

1. फागुन मंडई कार्यक्रम का पोस्टर
2. फागुन मंडई निमंत्रण पत्र

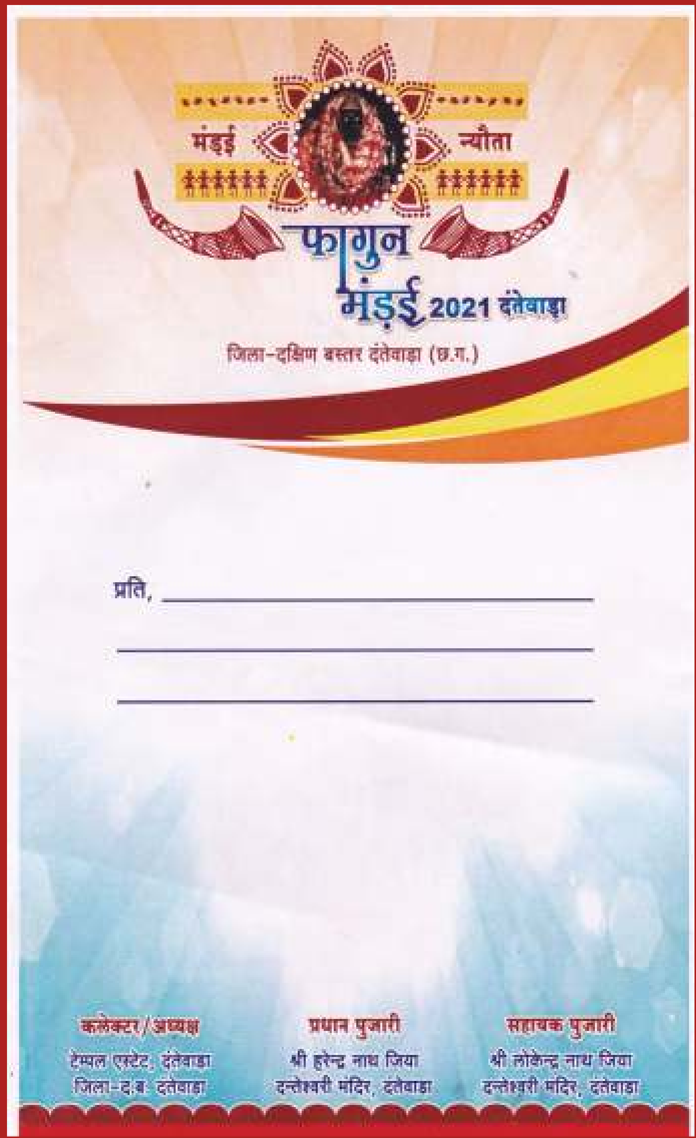

कार्यक्रम

क्र.	दिनांक	दिन	तिथि	पालकी	कार्यक्रम	समय
01	20.03.2021	शनिवार	सप्तमी	प्रथम पालकी	कलश स्थापना	प्रातः 11 बजे से
02	21.03.2021	रविवार	अष्टमी	द्वितीय पालकी	ताड़ पलंगा धोनी	रात्रि 8 बजे से
03	22.03.2021	सोमवार	नवमी	तृतीय पालकी	खोरखूंदनी	रात्रि 9 बजे से
04	23.03.2021	मंगलवार	दशमी	चतुर्थ पालकी	नाचा मांडनी	रात्रि 10 बजे से
05	24.03.2021	बुधवार	एकादशी	पंचम पालकी	लम्हामार	रात्रि 1 बजे से
06	25.03.2021	गुरूवार	द्वादशी	षष्ठम पालकी	कोडरीमार	रात्रि 2 बजे से
07	26.03.2021	शुक्रवार	त्रयोदशी	सप्तम पालकी	चितलमार	रात्रि 3 बजे से
08	27.03.2021	शनिवार	चतुर्दशी	अष्टम पालकी	गंवरमार एवं नारी कार्यक्रम	रात्रि 4 बजे से
09	28.03.2021	रविवार	पूर्णिमा	नवम् पालकी	आंवरामार, होलिका दहन	रात्रि 7 बजे से
10	29.03.2021	सोमवार	प्रतिपदा	–	रंग-भंग, पादुका पूजन	प्रातः 10 बजे से
11	30.03.2021	मंगलवार	द्वितीया	–	विश्राम	–
12	31.03.2021	बुधवार	तृतीया	–	मेला मंडई	दोपहर 2 बजे से
13	01.04.2021	गुरूवार	चतुर्थी	–	देवी-देवताओं की विदाई	प्रातः 10 बजे से

।। श्री श्री १७०८ श्री दंतेश्वरी माईजी ।।

मंडई न्यौता

फागुन मंडई 2021 दंतेवाड़ा

जिला-दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 386 किमी दूर दक्षिणी छोर पर स्थित जिला मुख्यालय दंतेवाड़ा के शंकिनी-डंकिनी नदियों के संगम स्थल पर विराजित है माँ दंतेश्वरी देवी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्राचीन शक्तिपीठ। इसी अधिष्ठात्री माँ दंतेश्वरी की छत्रछाया में फागुन मड़ई आयोजित होता है। बसंत ऋतु के आगमन पर सम्पूर्ण जनजीवन दंतेवाड़ा का प्रसिद्ध फागुन मंडई के सम्मोहन में बंधकर इस संगम पर इकट्ठा हो जाता है।

ऐसी मान्यता है कि शक्ति स्वरूपा माँ सती के इस स्थान पर दांत गिरने के कारण इस देवी का नाम दंतेश्वरी एवं स्थान का नाम दंतेवाड़ा पड़ा। मंदिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में करवाया। आदिवासी लोक संस्कृति, परम्पराओं एवं मान्यताओं को जीवित रखने हेतु राजा पुरूषोत्तम देव ने फागुन मंडई की शुरूआत कराई।

फागुन मंडई के नाम से विख्यात इस वासंतिक पर्व की औपचारिक शुरूआत बसंत पंचमी के दिन मंदिर के प्रांगण में त्रिशूल स्तम्भ गाड़कर एवं माई जी के छत्र पर आम बौर चढ़ाकर की जाती है तथा फागुन मास के अंतिम दस दिनों में आयोजित होने वाला आदिवासी समाज की पारम्परिक देवभक्ति, आदिवासी संस्कृति, लोक नृत्यों का यह उत्सव अपने चरम पर होता है।

मंदिर के सामने स्थित मैदान मेंढ़का डोबरा में माँ दंतेश्वरी की कलश स्थापना के साथ ही इस उत्सव का शुभारंभ होता है। जिसमें बस्तर संभाग एवं उड़ीसा के नवरंगपुर जिले के सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया जाकर सहभागी बनाया जाता है।

तत्पश्चात 9 दिनों तक विभिन्न पारंपरिक नृत्य एवं शिकार नृत्यों का आयोजन किया जाता है। अंत में रंग-भंग (गुलाल-अबीर) उत्सव मनाकर सभी आमंत्रित देवी-देवताओं का पादुका पूजन किया जाता है। अगले दिन आमंत्रित सभी देवी-देवताओं को उपहार दिया जाकर विदाई दी जाती है।

कैसे पहुंचे... छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर, देश के अन्य भागों से हवाई, रेल तथा सड़क मार्गों से सुव्यवस्थित जुड़ा हुआ है। रायपुर, दुर्ग एवं बिलासपुर से दंतेवाड़ा के लिए सड़क मार्ग द्वारा बहुतायत में लक्जरी स्लीपर बसों का संचालन होता है। प्राईवेट टैक्सी द्वारा भी 7 घंटे की यात्रा द्वारा रायपुर से पहुंचा जा सकता है। रेल यात्रा विशाखापट्नम से भी किरंदुल पैसेन्जर से यहां पहुंच सकते है।

कहां रूकें... माँ दंतेश्वरी के 2 धर्मशाला निर्मित है, जिसमें नाममात्र शुल्क अदा कर ठहरा जा सकता है। इसके अतिरिक्त होटल मधुबन एवं विभिन्न विभागों के सरकारी विश्राम गृह भी है।

अन्य समीपस्थ दर्शनीय स्थल - ढोलकल (15 किमी), बारसूर (30 किमी), लौह नगरी बैलाडीला (40 किमी), चित्रकोट जलप्रपात (75 किमी), तीरथगढ़ जलप्रपात एवं कुटुमसर गुफा (80 किमी)।

संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर 24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website: cgtrti.gov.in, E-mail: trti.cg@nic.in

Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531